INDIAN ETHICS

भारतीय नीतिशास्त्र की कुछ विशेषताएँ हैं जो प्रायः सभी भारतीय नैतिक सम्प्रदायों में सामान्य है और जिनके कारण ये पाश्चात्य नैतिक चिन्तन से भिन्न है।

प्राचीनता :— भारतीय नीतिशास्त्र की पहली विशेषता यह है कि यह प्राचीनतम नीति-शास्त्रीय विद्या है। हिन्दू धर्मशास्त्र तथा मीमांसा दर्शन के नैतिक विचार नैतिक दर्शन के व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत करते है। इन विचारों की जड़ वैदिक विचारों में है। वेद मात्र एक सर्वव्यापी नैतिक नियम की चर्चा नहीं करता अपितु कर्तव्यों की सूची भी प्रस्तुत करता है जिसमें अहिंसा तथा सत्य को प्राथमिकता दी गई है। दोनों को सर्वोच्च सद्गुण विचारा गया है। वेद के काल के विषय में ठीक-ठीक जानकारी नहीं है, पर यह निर्विवाद है कि संस्कृति के इतिहास में ये प्राचीनतम विचार है। अतः इन पर आधारित भारतीय नीतिशास्त्र प्राचीनतम है। इसकी प्राचीनता के कारण इनमें कुछ अस्पष्टता तथा कुछ असंगति अवश्य मिलती है, पर धीरे-धीरे व्यवहारिक जीवन में उनकी जकड़ मज़बूत होती गई और वे भारतीय जीवन के अंग हो गए है।

व्यावहारिकता :- भारतीय नीतिशास्त्र मात्र नैतिक अवधारणाओं का बौद्धिक अनुशील-न नहीं है अपितु नैतिक विचारों को जीवन में उतारने का प्रयास है। हम केव-ल यह नहीं जानना चाहते कि शुभ क्या है, अपितु यह कि उसे किन अवधारणों से प्राप्त किया जा सकता है। अतः भारतीय नीतिशास्त्र का दृष्टिकोण व्यावहारिक है। यह उन मार्गों निर्देश करता है जिनसे इसी जीवन में शुभ को प्राप्त किया जा सके। समाज का चार वर्णों तथा - आश्रमों में वर्गीकरण तथा चार पुरुषार्थों का उल्लेख इस तथ्य के उदाहरण हैं। भारतीय नीतिशास्त्र का पाश्चात्य नीतिशास्त्र से इस बात में भेद है, बर्कले, ह्यूम, बटलर, कांट, मिल, मूर आदि के नैतिक विचारों की भाँति भारतीय नैतिक विचार पुस्तकों में ही सिमटी नहीं है, उनका प्रभाव भारतीय जनजीवन पर भी होता है।

मानवीय दृष्टिकोण :- भारतीय नीतिशास्त्र का दृष्टिकोण मानवीय है। यह मात्र व्यक्ति के कल्याण के लिए ही नहीं, अपितु समाज के कल्याण के भी नियमों का प्रतिपादन करता है।

परस्पर संबंधों में भी इनका दृष्टिकोण मानवीय है। क्षमा को परम धर्म मानना इसका एक उदाहरण है। युद्धों में भी मानवीय मूल्यों को प्रतिफलित करना उसी मानस का एक दृष्टांत है। वर्तमान काल में मानवीय अधिकारों का हनन (Human rights violation) की चर्चा उन विचारों की दशा में एक कदम है।

सभी प्राणियों के प्रति प्रेम और करुणा :-
भारतीय नीतिशास्त्र की यह भी विशेषता है कि यह मात्र मानव समाज या व्यक्ति के प्रति ही अहिंसा, प्रेम अथवा करुणा का पाठ नहीं पढ़ाता पर सभी प्राणियों, वनस्पति जगत् आदि के प्रति भी समान सम्मान की चर्चा करता है। वर्तमान काल में जो एक समस्या बनी हुई है और जिसके लिए संसार के चिंतक विभिन्न उपायों की अनुशंसा करते हैं वे भारतीय आचार संहिता में वर्तमान हैं। भारतीय दार्शनिकों ने संपूर्ण प्राणी जगत् को समान विचारा है और इसीलिए सभी के प्रति समान आचरण की अनुशंसा करते हैं।